

जुलाई 2017 मूल्य 15 रुपये

रूपरेखा

सदाचार - सद्विचार - सत्संस्कार



तपती धूप में जल-क्रीडा
करते हुए राजहंस

रूपरेखा

सदाचार ~ सद्विचार ~ सत्संस्कार

मार्गदर्शन :

पूज्या प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री जी

संयोजना :

साध्वी कनकलता

साध्वी वसुमती

परामर्शक :

श्रीमती मंजुबाई जैन

प्रबंध संपादक :

अरुण कुमार पाण्डेय

सम्पादक :

श्रीमती निर्मला पुगलिया

वार्षिक शुल्क : 150 रुपये

आजीवन शुल्क : 3000 रुपये

प्रकाशक

अरुण तिवारी

मानव मंदिर मिशन ट्रस्ट (रजि.)

पोस्ट बॉक्स नं. : 3240

सराय काले खाँ बस टर्मिनल के सामने,

नई दिल्ली - 110013

फोन नं. : 26345550, 26821348

Website : www.rooprekha.com

E-mail : contact@manavmandir.info



इस अंक में

जिसका मन मजबूत होगा उसे कठिनाई कभी हरा नहीं सकती

इस समस्या से अर्जुन का भी पाला पड़ा था और श्रमण केशी कुमार भी दुविधा में पड़े थे। अर्जुन को कृष्ण ने संकट से निकाला तो केशी को महावीर ने। कृष्ण और महावीर एक जैसी बात ही कहते हैं कि मन पर अभ्यास से काबू पाना होगा। वह आत्मबल के बिना संभव नहीं है। आत्मबल में मौजूद है ज्ञान, जो चंचल मन पर लगाम लगाता है।

05

विनय और अनुशासन हैं शाश्वत मूल्य

विनय और अनुशासन भारतीय विद्या के मूल तत्व हैं। अध्यात्म विद्या इनके बिना आगे चलती ही नहीं। हमारे शास्त्र इन तत्वों से भरे पड़े हैं। शास्त्रों के सत्य जब तक जीवन से नहीं जुड़ते, उपयोगी नहीं बन सकते। लगता ऐसा है कि इन्हें जीवन से जोड़ने के स्थान पर जीवन से पोंछा जा रहा है इनके पल्लवन की ओर ध्यान ही कम जा रहा है।

07

मन्त्र और माला

तर्जनी अंगुली को मान्त्रिकों ने निषिद्धअंगुली माना है। अतः इस से कभी माला का मनका आगे नहीं सरकाना चाहिए। अंगुठा और मध्यमा अंगुली का ही मन्त्र जपते हुए उपयोग करना चाहिए। मध्यमा अंगुली सम्पन्नता, समृद्धि और भरेपूरेपन की प्रतीक है। समृद्धि व साम्राज्य अंगुली (मध्यमा-अंगुष्ठयुक्त) को माला जपते समय जैन तीर्थंकरों के श्रीवत्स स्थान पर रखना चाहिए।

14

पदूषण-मुक्त पर्यावरण

जन्-जागरण से ही संभव

हम अपने देश की ही चर्चा करें। कितने-कितने हजार करोड़ों रूपयों की योजनाओं के बावजूद जीवनदायिनी मां गंगा-यमुना की धारा निर्मल पावन क्यों नहीं हो पा रही है। जब तक नगरों-महानगरों के गंदे नाले इसमें गिरते रहेंगे, कल-कारखानों के जहरीले कचरे इसमें प्रवाहित होते रहेंगे, ये नदियाँ कैसे अपनी विशुद्धता निर्मलता पा सकेंगी? और यह कार्य योजनाओं से नहीं, देश-व्यापी जन-जागरण से ही संभव होगा।

26

चलती चक्की देख के, दिया कबीरा रोय,
दो पाटन के बीच में साबुत बचान कोय।

बोध-कथा

दान

नगर में एक विशाल मंदिर का निर्माण होना था। जोर-शोर से चंदा एकत्र किया जाने लगा। सबसे ज्यादा दान देने वाले का नाम दानपट्टिका में सबसे ऊपर लिखा जाना था। इसके लिए शहर के प्रतिष्ठित लोग लाला भगवान राय के पास पहुंचे और उन्हें अधिकाधिक चंदा देने के लिए उकसाने लगे। भगवा राय समर्थ थे। शहर में ऐसा और कोई नहीं था, जो उनसे ज्यादा चंदा देने में सामर्थ्य रखता हो, इसीलिए लोग जानबूझकर सबसे बाद में उनके पास पहुंचे थे। अब तक की सबसे ज्यादा दान राशि की जो रसीद जमाकर्ताओं ने काटी थी, लाला जी को वह दिखलाई। लाला जी ने पूछा कि भाई मुझ से क्या चाहते हो।

आंगंतुक में से एक ने कहा कि उन्होंने ग्यारह लाख रुपये दिए हैं, अतः आप कम से कम बारह लाख रुपये अवश्य दें, जिससे दानपट्टिका में आपका नाम सबसे ऊपर मोटे अक्षरों में लिखा जा सके। लाला जी ने

कहा कि मेरा नाम सबसे ऊपर लिखने की जरूरत नहीं है। पैसे तो मैं दे दूंगा, पर शर्त यही है कि दानपट्टिका में सबसे ऊपर उन्हीं सज्जन का नाम लिखा जाए, जिन्होंने अब तक की सबसे ज्यादा रकम ही है।

लालाजी ने बीस लाख रुपये देते हुए कहा कि दो रसीदें काट दीजिए— एक दस लाख की मेरे नाम से और दूसरी दस लाख की मेरी सहधर्मिणी के नाम से।

पट्टिका पर सबसे ऊपर मोटे अक्षरों में लिखवाने के उद्देश्य को ध्यान में रखकर दिया गया दान वास्तव में यश की कामना से दिया गया दान है, जो काम कर्म की श्रेणी में आता है, लेकिन दान सदैव यश की कामना से ऊपर उठकर देना ही श्रेयस्कर है। निष्काम भाव से दिया गया दान मन को जो सात्विक सुख और आनंद देता है, उसका आकलन संभव नहीं है। जिसने देने की इस कला को सीख लिया, भला उसे किस चीज की कमी और यश से उसे क्या प्रयोजन?

सिर्फ अभिव्यक्ति का फर्क है

आदमी एक सम्भावना है- फ्लेक्सिबल, बड़ी लोचपूर्ण सम्भावना है। यही उसकी खूबी है। आप किसी कुत्ते को और कुछ नहीं बना सकते, वह कुत्ता ही रहेगा। किसी शेर को कुछ नहीं बना सकते, वह शेर ही रहेगा। फ्लेक्सिबल नहीं है, फिक्सड है- लोच नहीं है। आदमी लोचपूर्ण है। आदमी को जो धारणा दे दें, वह वही बन जाएगा।

जब मैं आपसे कहता हूँ आप ईश्वर हैं, तो मैं आपको एक धारणा दे रहा हूँ परम-विस्तार की। उस धारणा का आज ही फल नहीं हो जाएगा। आज ही आप एकदम से छलांग लगाकर ईश्वर नहीं हो जाएंगे, यह मैं जानता हूँ। लेकिन वह धारणा अगर गहरे में बैठ जाए, तो आपके भीतर जो छिपा है, उसका आविष्कार हो जाएगा।

और ईश्वर होना आपकी नियति है, आपके भीतर छिपा है। आप कितने ही जन्मों-जन्मों तक टालते रहें, बच न सकेंगे। इसलिए ईश्वर को कोई जल्दी भी नहीं है कि आप अभी ईश्वर हो जाएं। समय की वहां कोई कमी नहीं है। अनन्त समय पड़ा है। आप कितने ही जन्म भागते रहें, दौड़ते रहें, सब कुछ करते रहें, एक न एक दिन आप उसके जाल में गिर जाएंगे। लेकिन जब तक आप नहीं गिरते, तब तक अकारण दुख भोगते हैं। जो मैं जोर देकर कहता हूँ कि आप परमात्मा हैं, उसका कुल कारण गहरे में इतना है कि जो आपकी अन्तिम नियति है, जो डेसटिनि है, जो

आपकी आखिरी होने की सम्भावना है, वह परमात्मा है। और वह आपका बीज भी है, क्योंकि आखीर में केवल वही हो सकता है, जो आज भी छिपा हो। शून्य से कुछ भी पैदा नहीं होता, जो मौजूद है, उसी का उद्घाटन होता है। अगर आपके मन में यह ख्याल बैठ जाये, और यह ख्याल सत्य के अत्यंत अनुकूल है कि आप खंड नहीं है, अखंड आपके भीतर विराजमान है।

जब मैं कहता हूँ कि आप परमात्मा हैं तो सिर्फ इसलिए कि एक विचार की भूमिका तैयार हो जाए और फिर आप इस यात्रा पर निकल पाएं। आप जिद्द करते हैं कि नहीं है। आप यह कर रहे हैं कि हमें इस यात्रा पर नहीं जाना है। न जाना हो, आपकी मर्जी। आपको कोई जबर्दस्ती इस यात्रा पर नहीं भेज सकता है। लेकिन अगर जाना हो, तो आपको इस यात्रा के कुछ सूत्र समझ लेने जरूरी हैं। और पहला सूत्र यह है कि अन्त में जो आप हो जाएंगे, वह आप आज, अभी और यहीं हैं। कितना ही समय लगे, लेकिन समय केवल वही प्रकट कर पाएगा, जो आपमें छिपा था।

महावीर को, बुद्ध को, कृष्ण को हम भगवान कहते हैं इसीलिए, कि उनमें वह प्रकट हो गया है, जो हममें प्रकट नहीं है। लेकिन हममें और उनके स्वभाव में कोई फर्क नहीं है। सिर्फ अभिव्यक्ति का फर्क है।

प्रस्तुति : निर्मला पुगलिया

पूज्य गुरुदेव के पत्रचन-सारांश

○ रुचि आनंद



जिसका मन मजबूत होगा उसे
कठिनाई कभी हरा नहीं सकती

हम सब जिन्दगी के मैदान में खड़े हैं। जीने के लिए हर कोई जद्दोजहद कर रहा है। कोई भूलकर भी यह न समझे कि उसका संघर्ष कम है और आपका ज्यादा। फर्क सिर्फ इतना है कि हर किसी के संघर्ष का रूप और स्तर अलग-अलग है। बड़े से बड़ा आदमी भी जब सुबह सोकर उठता है तो वह पहले अपनी हथेलियों को निहारता है। कहा जाता है कि उसमें वह भाग्य देखता है लेकिन असलियत यह है हथेलियों में भाग्य से ज्यादा विश्वास के लिए जगह होती है। यह आप पर निर्भर है कि आपका

मन क्या कबूल करता है। जिसका मन मजबूत होगा उसे जीवन में कभी कोई कठिनाई हरा नहीं सकती है।

अमेरिका यात्रा के दौरान जब स्वामी विवेकानंद को बोलने की अनुमति नहीं मिली तो वे निराश नहीं हुए। उन्होंने दृढ़ मनोबल का परिचय देते हुए अपने लिए अनुमति प्राप्त कर ही ली। उसके बाद क्या हुआ, यह पूरी दुनिया जानती है। मनोबल ऐसा मानवीय गुण है जो हमें हर संकट से निकालने और जीत में मददगार बनता है। लेकिन उसके साथ आत्मबल का होना जरूरी है। एक कहावत है कि किसी भी लड़ाई में तब तक हार नहीं माननी चाहिए जब तक जीत न मिल जाए। इसका सीधा संकेत है कि कोई भी लड़ाई मनोबल से ही जीती जा सकती है। आज अगर दुःख का प्रभाव ज्यादा मजबूत दिखाई दे रहा है तो इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि हमारा मन छोटा हो गया है। जाहिर है कि मन छोटा होगा तो सुख भी छोटा ही होगा। हमारे ऋषि-मुनियों ने तो शुरू से ही इस मन को विराट बनाने की कल्पना रखी है। अगर भीतर प्रेम-निर्झर नहीं बह रहा है या प्रीति-पूर्ण सहयोग का भाव नहीं है तो

समझो कि हमारा पूरा अस्तित्व ही गड़बड़ा जाएगा। प्रेम से किसी को जीतने का जो सुख मिलता है वह किसी को हराने में नहीं मिल सकता। जिसका मनोबल और आत्मबल जितना मजबूत होगा, वह उतना ही बड़ा विजेता होगा। आत्मबल अन्दर से ताकतवर बनाता है और मनोबल बाहरी संघर्ष के लिए तैयार करता है। हमारा मन ही हमें संचालित करता है। उसमें बल भरने की जिम्मेदारी भी हमारी है। लेकिन इसके साथ यह भी खयाल रखना होगा कि मन को चंचल होने से बचाएं। यह चंचलता हमें अश्व गति से ले भागती है और हम किसी एक लक्ष्य या जगह पर टिक नहीं पाते हैं। इस समस्या से अर्जुन का भी पाला पड़ा था और श्रमण केशी कुमार भी दुविधा में पड़े थे। अर्जुन को कृष्ण ने संकट से निकाला तो केशी को महावीर ने। कृष्ण और महावीर एक जैसी बात ही कहते हैं कि मन पर अभ्यास से काबू पाना होगा। वह आत्मबल के बिना संभव नहीं है। आत्मबल में मौजूद है ज्ञान, जो चंचल मन पर लगाम लगाता है।

संसार जिस हाल में है उसे धर्म ही सौम्य और संतुलित बना सकता है
 एक अजीब सा माहौल दुनिया पर हावी हो गया है। जिस धर्म का काम है प्रेम का संदेश देना, उसे नफरत फैलाने के एक तंत्र के

रूप में विकसित किया जा रहा है। किसी को यह परवाह नहीं है कि धर्म के नष्ट होने या इसके बारे में भ्रम फैलने का नुकसान पूरी मनुष्यता को होगा। आज के वैज्ञानिक युग में आम लोकमानस धर्म के प्रति और भी शंकाशील हो रहा है। दरअसल आज लोग संप्रदाय को ही धर्म मान कर चलने लगे हैं। संप्रदाय का एक स्वभाव बन गया है कि वह अपने को सच्चा और दूसरों को पाखंडी साबित करे।

धर्म की धारणा के विपरीत आज हमारा सारा ध्यान जीवन के भौतिक निर्माण पर ठहर गया है। जीवन के वास्तविक निर्माण के बारे में सोचने की फुरसत नहीं है। आदमी के जीवन में सुख-सुविधाओं के जितने साधन हो सकते हैं, वे सब बनाए जा रहे हैं, लेकिन खुद आदमी के बनने पर ध्यान नहीं दिया जा रहा है। इसलिए आज धर्म के सामने सबसे बड़ा सवाल यही है कि क्या वह वर्तमान जीवन की हमारी समस्याओं का कोई समाधान दे सकता है? अगर नहीं तो धर्म के होने को कौन स्वीकारेगा?

आज धर्म दो तरह से अपने ही हनन में लगा है। पहला, उसने भीतर का प्रयोगात्मक पक्ष छोड़ दिया है। दूसरा, वह विज्ञान के विरोध में खड़ा हो गया है जिसकी प्रक्रिया अनुसंधान व प्रयोगपरक

है। वही भीतरी तौर पर धर्म की भी प्रक्रिया रही है। विज्ञान के विरोध का अर्थ है प्रयोग, अनुसंधान तथा बौद्धिकता का विरोध। यह धर्म की अपनी आधारशिला को ही भीतर से खोखला कर रहा है और उस पर से मानव-जाति की बौद्धिक आस्था को मिटा रहा है। लोग यह भूल गए हैं कि धर्म स्वयं भी अंतःकरण का विज्ञान ही है। उसी आधार पर उसकी सत्ता मानवता के लिए सहस्राब्दियों तक जीवंत और प्रभावक रही। इस सदर्भ में धर्म के सार्वकालिक एवं सार्वभौमिक मूल्यों को उजागर करना सबसे जरूरी हो गया है। उन मूल्यों को छोड़कर आज सिर्फ उपासना पर जोर देना एक चिंतनीय स्थिति है। संप्रदायों और उनके भेद-प्रभेदों में धर्म की सत्ता बंदी होने के

साथ-साथ निस्तेज भी हो रही है। वस्तुतः संप्रदायों का आधार ही भेद तथा संघर्ष है। अतः उपासना को उसका आधार बनाकर विविध संप्रदायों ने धर्म को अंदरूनी संघर्ष में लगा दिया है।

यह कहना ठीन नहीं होगा कि संप्रदायों को विघटित कर देना चाहिए, पर इतना तो हो ही सकता है कि उन्हें एक व्यापक आचारीय मूल्यों के आधार पर मानवता के हित में लगाया जाए। आज संसार जिस हाल में है, उसे धर्म ही सौम्य और संतुलित कर सकता है। यह निर्विशेष धर्म होगा। अगर समय रहते इस दिशा में उपयुक्त पहल न की गई तो संप्रदायों के साथ धर्म का भविष्य भी संदेहास्पद हो जाएगा।

बाल-कहानी

कौआ और लोमड़ी

एक बार एक कौए को एक रोटी मिली। लोमड़ी ने सोचा क्यों न मैं इस कौए को मूर्ख बनाकर रोटी ले लूँ।

लोमड़ी बोली - कौए भाई तुम इतना अच्छा गाते हो! मुझे भी एक गाना सुनाओ।

कौए ने जैसे ही गाने के लिए मुँह खोला, रोटी नीचे गिर गई।

लोमड़ी रोटी लेकर चली गई।

विनय और अनुशासन हैं शाश्वत मूल्य

○ संघ पवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री



एक समय था, जब बच्चों को जगाने के लिए प्रभाती गाई जाती थी। इस युग में मां बच्चों को जगाने के लिए कहती है- गेटअप, हरिअप, बाथ टाइम आदि। मन्त्र जाप और भागवत-स्मरण की प्रेरणाएं लुप्त होती जा रही हैं। पूज्यजनों और गुरुजनों के सामने हाथ जोड़ने और उनके चरणों में झुककर प्रणाम करने की परम्परा समय की परतों के नीचे दब रही है। हाथ मिलाना, टा-टा, बाय-बाय की संस्कृति पनप रही है। ऐसा करने वाले लोग अपने आपको आधुनिक मानते हैं। ऐसे लोगों में नवीनता का बढ़ता हुआ व्यामोह एक धुन है, जो धीरे-धीरे देश की सांस्कृतिक विरासत को

खोखला कर रही है। प्राचीनता और नवीनता के बीच चल रहा संघर्ष नया नहीं है, पर यह स्थिति सुखद नहीं है। कोई परम्परा या वस्तु प्राचीन होने के कारण अप्रयोजनीय बन जाए, यह यौक्तिक बात नहीं है। नवीन होने के कारण हर परम्परा और वस्तु ग्राह्य है, यह चिन्तन बुद्धिमतापूर्ण नहीं लगता। हमारे बारे में कहा जाता है कि हम नवीनता के पृष्ठपोषक हैं। किसी दृष्टि से यह बात ठीक भी है। किन्तु जिन प्राचीन परंपराओं की उपयोगिता है, जो प्राचीन वस्तुएं काम की हैं, उनकी उपेक्षा को हमने कभी उचित नहीं समझा। हम कभी नहीं चाहते कि प्राचीन उपयोगी तत्वों के स्थान पर नई बातों को प्रतिष्ठित किया जाए। विनय और अनुशासन भारतीय विद्या के मूल तत्व हैं। अध्यात्म विद्या इनके बिना आगे चलती ही नहीं। हमारे शास्त्र इन तत्वों से भरे पड़े हैं। शास्त्रों के सत्य जब तक जीवन से नहीं जुड़ते, उपयोगी नहीं बन सकते। लगता ऐसा है कि इन्हें जीवन से जोड़ने के स्थान पर जीवन से पोंछा जा रहा है इनके पल्लवन की ओर ध्यान ही कम जा रहा है। एक विद्यार्थी की स्कूल से कॉलेज तक की

यात्रा में ऐसे संस्कारों का कितना विकास हो पाता है? इस प्रश्न को सही ढंग से उत्तरित करना बहुत कठिन है। विद्यार्थी को प्रारम्भ से ही विनय और अनुशासन के संस्कार उपलब्ध होते रहें, तो उसकी जीवन शैली में बदलाव या सुधार हो सकता है। पदार्थ, शिल्प, कला आदि के क्षेत्र में मनुष्य का दृष्टिकोण बदला है। अब वह प्राचीन वस्तुओं को आधुनिकता और फैशन के नाम पर स्वीकार कर रहा है। एक समय था, जब आम आदमी ग्राम्य जीवन जीता था। कालान्तर में सभ्यता को विकास की पगडंडियों पर धकेला गया। वेशभूषा बदली, आभूषण बदले, जीवन के तौर-तरीके भी बदले। नवीनता के व्यामोह में जो चीजें स्वीकृत हुईं। उनसे मन ऊब गया। फिर उसी दिशा में पांव बढ़ चले। इसे प्रगति कहा जाए या प्रतिगति? काश! भारत अपनी सांस्कृतिक विरासत की सुरक्षा कर पाता,

पर इस विषय में कौन सोचे? व्यापारी अपने लाभ की बात सोचते हैं। एजेंट अपना हित देखते हैं। नए लेबल और नए नाम से आकृष्ट होकर मनुष्य अपने अतीत में डग भर रहा है। विनय और अनुशासन-जीवन के शाश्वत मूल्य हैं। इसकी उपेक्षा जीवन की उपेक्षा है। विद्यार्थियों में बढ़ती हुई उच्छृंखलता, परिवारों में हो रहा बिखराव, समाज में बढ़ता हुआ दिखावा और देश में पांव फैला रही अराजकता एक धुधले भविष्य का संकेत है। यदि मनुष्य चाहता है, कि उसके अतीत से वर्तमान बेहतर हो और वर्तमान से भविष्य बेहतर हो, तो उसे विनय और अनुशासन को जीवन के साथ जोड़ना होगा। प्राचीन वस्त्रों और आभूषणों की तरह विनय और अनुशासन के संस्कार भी लौट आएंगे, तो युग को नई दिशा मिल सकती है।

कविता

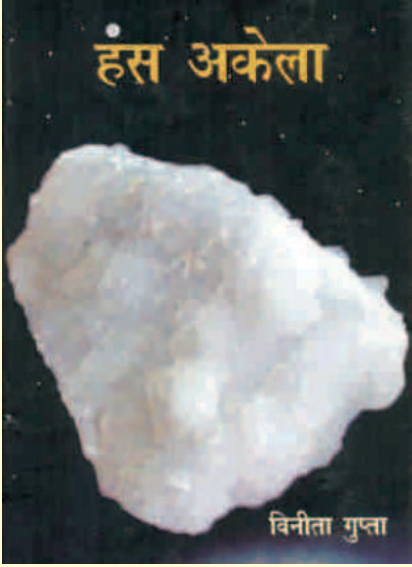
○ आचार्यश्री रूपचन्द्र

धर्म नाम पर निज स्वार्थों का पोषण करना छोड़ें
धन के बल पर नाम धर्म का रोशन करना छोड़ें,
सचमुच उमड़ी घटा दया की इस हिरणांकुश दिल में,
कृपया आप गरीबों का अब शोषण करना छोड़ें।

हंस अकेला

{उपन्यास-शैली में आचार्यश्री रूपचन्द्र की जीवन-गाथा}

○ डॉ. विनीता गुप्ता



गतांक से आगे-

रूपा के मन में वैराग्य का पथ आकार लेने लगा था। पिता जी से कुछ भी कहने का साहस उसमें नहीं था। लेकिन आम बच्चों की तरह वह स्वयं को माँ के बहुत करीब पाता था। वह मौका तलाश रहा था कि कब माँ से अपने मन की बात कहे। एक दिन विद्यालय से जल्दी आ गया। वह जानता था कि अब तक उसके बाकी भाई-बहन लौटे नहीं होंगे। माँ अकेली होंगी। घर लौटा तो देखा माँ अकेली थीं।

छोटे भाई झूमर और माणक को खिला रही थीं। रूपा को जल्दी आया देख वह चौकी लेकिन बहुत अचम्भा नहीं हुआ। 'रूपा, जल्दी आ गया, क्या तबियत ठीक नहीं है?' अपने कमरे में बस्ता रखने के लिए सीढ़ियां चढ़ते रूपा ने माँ का प्रश्न तो सुन लिया, लेकिन कोई उत्तर दिए बिना सीधे भीतर चला गया। उसने सोच रखा था कि आज वह अपनी मंशा माँ के सामने जाहिर कर देगा। पाँच मिनट बाद कमरे से निकला और सीधा माँ के पास पहुंचा। छोटी बहन गिन्नी को गुदगुदाया तो वह खिलखिलाकर हँस पड़ी। उसकी खिलखिलाहट रूपा को बहुत भायी। पाँची देवी को समझ आ गया था कि सब ठीक-ठाक है। उन्होंने ज्यादा सवाल-जबाब नहीं किए। देखा कि रूपा गिन्नी के साथ खेल रहा है। वे उठकर रसोई में गईं और कटोरी में रूपा के लिए मीठा ले आईं। खाते हुए रूपा ने अपना मन कड़ा किया। और आखिर अपनी बात कहनी शुरू की-

माँ, एक बात कहूँ। मना मत करना। मैं संत बनना चाहता हूँ, दीक्षा लूंगा आचार्य जी से। मुनियों-संतों की तरह जीवन बिताऊंगा।

एक साँस में ही कह गया रूपा यह सब। पाँची देवी के काटो तो खून नहीं। जड़ हो गई रूपा की बात सुनकर। फिर उन्हें आचार्यश्री तुलसी की बात याद आयी। कुछ बरस पहले सरदारशहर प्रवास के दौरान उन्होंने पाँची देवी से वचन लिया था— ‘अगर आपके घर का कोई भी सदस्य दीक्षा लेने के लिए कहे तो आप मना नहीं करेंगी। खुशी-खुशी उसे अनुमति देंगी।’

पाँची देवी ने भरी आँखों से रूपा को देखा और उठ कर चली गयीं। उस समय तो आचार्यश्री को वचन दे दिया था, लेकिन यह थोड़े ही पता था कि सचमुच उनका अपना ही जिगर का टुकड़ा रूपा संन्यास लेकर पूरे संसार का हो जाएगा। भीतर ही भीतर भीषण आँधी चल रही थी। वे कमरे में जा कर बिस्तर पर आँखें मूँद कर लेट गयीं। तेज हवाओं का रेला थम नहीं रहा था। रूपा को जबाब देने से पहले उन्हें अपने आप को जबाब देना था। कभी-कभी उनकी स्वयं की भी इच्छा होती थी वैराग्य की। किन्तु सांसारिक दायित्वों को वे जानती थीं। उन्हें निभाना उनकी प्राथमिकता थी। वैराग्य का पथ उन्हें आमंत्रित करता था, लेकिन सांसारिक कर्तव्य उस आमंत्रण को टुकरा देने को बाध्य करता था। संत जीवन की निर्मलता और ऊँचाइयों से वे परिचित थीं। लेकिन अपना बेटा घर-बार छोड़कर

वैराग्य-पथ पर चल पड़े, एक माँ कैसे सोच सकती है? पाँची देवी माँ थीं। माँ तो बच्चे को जन्म देने के बाद उसकी शादी-ब्याह और गृहस्थी जमने तक के सपने देखने लगती है। रूपा ने दीक्षा लेने की बात कहकर शांत मानस-जल में जैसे कंकड़ फेंक दिया था। वे जल्दी ही जल की हलचल को शांत कर देना चाहती थीं। रूपा से उन्हें कुछ ज्यादा ही लगाव था। अचानक उनकी मुँदी आँखों में एक दृश्य उभरने लगा। घर के सब लोग बीमार रूपा की चारपाई के इर्द-गिर्द खड़े हैं। कहा जा चुका है कि अंतिम साँसें तो धरती माँ की गोद में ही होनी चाहिए। और मरणासन्न बेटे रूपा को चारपाई से उतार कर धरती पर लिटाते हुए देख उनका धीरज टूट गया था, तभी भंवरलाल दूगड़ हनुमान जी की तरह बूटी लेकर आए और रूपा की मृतप्राय देह में चेतना लौटी।

बार्यी करवट लेटी पाँची देवी के आँखों से बहे आँसुओं ने तकिए के एक हिस्से को भिगो दिया था। वे आगत-अनागत से जूझ ही रही थीं कि बाहर धड़ाम की आवाज और माणक की चीखों ने उन्हें झकझोर दिया। आँसू पोंछ कर वे तेजी से बाहर की ओर भागीं। रूपा माणक को उठा रहा था। पाँची देवी ने झट से माणक को गोद में उठाया। उसका माथा दबाया। माथे पर

बड़ा-सा नीला गूमड़ पड़ गया था। पाँची देवी ने अपनी साड़ी के पल्लू को रूमाल की तरह मुँह पर लगाया। भाप से गरम क्रिया और गूमड़ पर रख कर दबा दिया। दर्द से बेहाल माणक का रोना अभी बंद नहीं हुआ। रूपा घबराया-सा देख रहा था।

X X X

रूपा को पतंग न उड़ाने का नियम दिलवा दिया गया था। उसका पतंग उड़ाना भी बंद हो चुका था। लेकिन मन हमेशा ही आसमान में डोर के साथ उड़ान भरता था। अभी भी दुलीचंद और दूसरे पतंगबाजों के साथ रूपा वहाँ मैदान में पहुँचता था। मन होता कि वह भी अपने हाथ में डोर थाम ले, लेकिन अब उसकी हैसियत एक दर्शक से ज्यादा नहीं थी। उस दिन पतंगबाजी की महफिल दुलीचंद गोठी के घर की छत पर जमी हुई थी। रूपा मुँडेर पर बैठा आसमान में बल खाती, तुमकती पतंग के नजारे देख रहा था। चरखी मिलाप के हाथ में थी। दोनों हाथ के अंगूठों और तर्जनी के बीच घूमती हुई चरखी पतंग को दिशा दे रही थी। तभी भीतर से दुलीचंद की माँ की आवाज आई-

‘दुली कितनी देर हो गई पतंग से उलझते, इधर आ। जरा अपने चाचा को दुकान पर जा कर ये डिब्बा दे आ।’

‘आया माँ...’ दुलीचंद ने जवाब दिया। लेकिन उसका मन तो पतंग में उलझा था। उसने माँ की बात अनसुनी कर दी। थोड़ी देर बाद फिर माँ की आवाज से तंद्रा टूटी- ‘सुना नहीं तूने- दुली, मैंने तुझे आवाज दी थी,’ माँ की आवाज के साथ उनके पाँवों की पायलों के घुंघरुओं की आवाज भी करीब आती लग रही थी। उन्होंने दुली की कान खिंचाई के लिए उस की ओर कदम बढ़ा दिए। दुली समझ गया कि मामला बिगड़ रहा है। इससे पहले कि माँ छत तक आतीं, उसने डोर चरखी मिलाप के हाथ में थमा दी और चरखी रूपा के हाथ में और यह कहते हुए सरपट भागा- ‘रूपा, तूने पतंग न उड़ाने का नियम लिया है, चरखी थामने का तो नहीं।’ दुलीचंद रूपा का गहरा मित्र था। रूपा के मन को वह समझता था। यह भी जानता था कि रूपा नियम का पक्का है और कुशल पतंगबाज भी। एकबारगी चरखी थामते हुए उसके हाथ जरूर काँपे, लेकिन दुलीचंद की बात से सारी हिचक दूर हो गयी। सचमुच नियम तो सिर्फ पतंग न उड़ाने का लिया है। और जब चरखी हाथ में आ गयी तो रूपा खुद को पतंग का हिस्सा मानने लगा। पतंग की दिशा के साथ चार कदम इधर-उधर चलने में उसे आनंद आ रहा था। पतंग कुछ देर के लिए आकाश में स्थिर हुई। फिर हवा के साथ नृत्य करने लगी। रूपा ने चरखी पर ढील देनी शुरू की

और पतंग आकाश की गहराइयों को नापते हुए पंछियों से होड़ करने लगी। शाम के समय साफ नीले आकाश में पतंग वर्तुलाकार घूमते लाल धब्बे की तरह दिखाई दे रही थी। इतने दिन बाद रूपा पतंग की उड़ान में हिस्सेदार बना था। भूखे के सामने भोजन हो। उसकी गंध नथुनों में आ रही हो और उसे न खाने का नियम दिलावा दिया जाए। ऐसी स्थिति रूपा की हो गई थी। रूपा और मिलाप बड़े मगन होकर पतंग के साथ आकाश की उड़ान भर रहे थे कि मिलाप के घर से भी बुलावा आ गया। मिलाप के घर में अनुशासन बहुत कड़ा था। एक बार बुलाने के बाद अगर वह नहीं पहुँचा तो उसकी खैर नहीं। यह बात मिलाप अपने अनुभवों से अच्छी तरह जानता था। इसलिये जैसे ही तुरंत घर पहुँचने का उसे संदेशा मिला, वह डोर छोड़ सीढ़ियों की तरफ चला। डोर छोड़ते ही पतंग हिचकोले खाने लगी। एक कुशल पतंगबाज के आगे पतंग हिचकोले खाने लगे? एक कुशल माँझी के होते हुए नैया डूब जाए? कैसे संभव है? कब रूपा के हाथों ने पतंग की डोर थाम ली, स्वयं रूपा भी समझ नहीं पाया। नियम, पिताजी, मुनि सोहनलाल सब उसके मानस से ओझल हो गये। चरखी जमीन पर थी और पतंग की डोर रूपा के हाथ में। वह ढील दे या डोर को खींचे, सब उसके अपने ऊपर निर्भर था। रूपा सधे

हाथों से पतंग को दिशा दे रहा था। वह जानता था कि उसने नियम तोड़ा है। मुनिश्री को दिये व्रत को खंडित किया है। पतंग की उड़ान के साथ-साथ कुछ प्रश्न बराबर उसके मानस को घेरते रहे- यह क्या परम्परा है, नियम के नाम पर किसी की खुशियां छीन ली जाएं? क्या कभी जबरन दिये गये नियमों का ईमानदारी से पालन किया जा सकता है? वह मन ही मन नियमों की व्याख्या करने लगा। व्रत तो वह होता है जिसे व्यक्ति अपने आप धारण करे। नियम तो वह होता है, जिसका पालन करने में कहीं कोई हिचक न हो। बंधन तो अपने मन का होता है। खैर! आज उसने जबरन दिलाया गया नियम तोड़ दिया। देर तक आसमान में पतंग के साथ खुलकर अठखेलियां करता रहा। पश्चिम में सूरज ढलने के साथ साँझ घिरने लगी थी। ऊँची उड़ती पतंग घोंसलों की तरफ वापस लौटते पंछियों की कतार में गुम हो गई थी। रूपा ने चरखी उठाई और डोर लपेटनी शुरू की। पतंग धीरे-धीरे धरती के पास आती जा रही थी। अंततः रूपा के हाथों में आ गई। आज रूपा ने आनंद-सागर में गोते लगाए थे। लेकिन वह नियम तोड़ने के अपराध-बोध से घिरा हुआ था। चुपके से पतंग और डोर दुलीचन्द के बरामदे में टाँगी और अपने घर चला आया।

जयचंदलाल को खबर लग गई थी कि

रूपा ने नियम लेने के बावजूद पतंग उड़ाई है। वे उसकी इस हरकत से नाराज थे। लेकिन अपनी नाराजगी जाहिर नहीं की।

X X X

पाँची देवी ने जैसे ही जयचंदलाल को रूपा की दीक्षा लेने की मंशा बताई, उन्हें पंडित द्वारा इस बारे में की गई भविष्यवाणी याद आ गई। क्या रूपा सचमुच घर छोड़कर दीक्षा के नियमों से बँधने की सोच रहा है? जयचंदलाल यह सब सोच-सोच कर परेशान थे। उन्होंने तय कर लिया था कि वे उसे समझाएंगे-बुझाएंगे कि संन्यासी जीवन के नियम-धर्म, व्रत का पालन करना आसान नहीं होता। वे यह भी सोच रहे थे, जब यह पतंग न उड़ाने के नियम का पालन तो कर नहीं पाया, दीक्षा के नियमों का पालन क्या करेगा? फिर अभी रूपा की उम्र ही क्या है? बारह पार कर उम्र का तेरहवां साल ही चल रहा है। अभी इसने जीवन में देखा ही क्या है? कुछ नहीं बालपन की बहक है। जयचंदलाल के मानस में घमासान मचा हुआ था। लेकिन वे जानते थे कि इसे शांत करने में वे सक्षम हैं। थोड़ा समझाना-बुझाना और थोड़ी डॉट-डपट। और नहीं तो मंत्री मुनि जी और मुनि सोहन लाल जी हैं ही अंतिम दवा के रूप में।

वे चुपचाप रूपा की गतिविधियों पर

नजर रख रहे थे। रूपा पहले से कुछ ज्यादा गंभीर हो गया था। गधैयाजी के नोहरे की तरफ उसका आना-जाना बढ़ गया था। उसका अधिक समय संतों की संगत में व्यतीत होने लगा था। एक दिन दोपहर बाद वह मुनि सोहनलाल के पास बैठा कुछ चर्चा कर रहा था। बातों ही बातों में पता चला कि आचार्य तुलसी सरदारशहर आने वाले हैं। रूपा ने आचार्यश्री के सामने अपनी दीक्षा के लिए अर्जी की रणनीति खुद ही बनानी शुरू कर दी थी।

सरदारशहर में आचार्यश्री का प्रवास पूरे नगर के लिए किसी पर्व से कम नहीं होता था। सुविख्यात जैन संत आचार्यश्री तुलसी तेरापथ संघ के प्रमुख होने के साथ-साथ परम विद्वान और समाज-सुधारक के रूप में प्रतिष्ठित थे। न सिर्फ सरदार शहर के तीन हजार जैन परिवार अपितु अन्य लोग भी पलक पाँवड़े बिछाकर उनकी प्रतीक्षा और स्वागत करते थे। सबके मन में उनके लिये अपार श्रद्धा थी। जब वे शहर में पधारते, पूरा सरदारशहर एक आध्यात्मिक आभामंडल से ज्योतित हो उठता। वे सदैव पदयात्रा करते थे। उनके साथ अनेक संत-साध्वी भी पदयात्रा में साथ होते।

X X X

-क्रमशः

मन्त्र और माला

○ साध्वी मंजुश्री

मन्त्र और माला

मन्त्र मन का बल है।

माला शक्ति है मन्त्र की।

मन्त्र की व्याख्या ही अब तक समझी है। अब माला को समझ लें। माला के मनकों द्वारा ही विभिन्न मन्त्रों की जप-संख्या पूरी की जाती है। बल व शक्ति के संग से ही सुख की सृष्टि होती है। भौतिक उपलब्धि हो या आध्यात्मिक, मन्त्र और माला का अविनाभावी सम्बन्ध होता है तभी पाया जाता है वह सब कुछ जो अदीठा होता है। अदीठा दिखलाई देने लगता है तो उसे चमत्कार कह दिया जाता है। मान्त्रिकजन इसे चमत्कार नहीं कहते। वे इसे कर्म/श्रम की विधिवत उपलब्धि मानते हैं। सच भी है जो किया जा रहा है, उसका प्रत्यक्ष परिणाम सामने आना ही चाहिए।

जप से मन्त्र फलित होता है। आवश्यकता होती है जप में निष्ठा की। माला के मनकों की चर्चा की जाय तो एक नयी पुस्तक रची जा सकती है। मैं अपने पाठकों को माला के सम्बन्ध में अनुभूत सार-संक्षेप बताऊंगी।

तर्जनी अंगुली को मान्त्रिकों ने निषिद्धअंगुली माना है। अतः इस से कभी माला का मनका आगे नहीं सरकाना

चाहिए। अंगूठा और मध्यमा अंगुली का ही मन्त्र जपते हुए उपयोग करना चाहिए। मध्यमा अंगुली सम्पन्नता, समृद्धि और भरेपूरेपन की प्रतीक है। समृद्धि व साम्राज्ञी अंगुली (मध्यमा-अंगुष्ठयुक्त) को माला जपते समय जैन तीर्थकरों के श्रीवत्स स्थान पर रखना चाहिए। माला में एक सौ आठ मनके होते हैं। मनके एक सौ आठ कहां पूरे हुए इसकी पहचान के लिए सुमेरु नाम की कल्पना की गयी। यह अन्य दानों से बड़ा होता है या फिर उसका आकार ही भिन्न प्रकार का होता है। जप नवसृष्टि यज्ञ होता है। अतः माला जपते हुए मन्त्र-साधक अन्धाधुन्ध भावशून्य मन्त्र साधना में न लगा रहे इस ख्याल से सुमेरु द्वारा उसे सावधान किया जाता है कि तुम केवल भागते ही नहीं जा रहे हो- तुम्हारा जप जागरणयुक्त है। अतः सुमेरु से आगे मत बढ़ो।

अहं से अहं की ओर

अहंकार ही वह शत्रु है जो मनुष्य को अहं की ओर बढ़ने में चीन की लौर प्राचीर बना खड़ा रहता है। अहं के ध्वंस होने पर अहं (अरिहंत-शत्रु हंता परमपद) का पुष्प उगता है। अहं से अहं तक की यात्रा का पूरा होना ही प्रत्येक मन्त्र साधक का संलक्ष्य होना चाहिए।

अहंयुक्त को अहंमुक्ति प्राप्त न हो जाए तब तक सहायक मन्त्रों से प्राप्त होने वाली सिद्धियां प्राप्त की जा सकें, इस दृष्टि से ही निम्न मन्त्रों का उल्लेख किया जा रहा है। जिस मन्त्र-साधक को जो इष्ट लगे, इन मन्त्रों का चुनाव वह अपनी सुविधानुसार कर सकता है।

आइए, सबसे पहले नवकार महामन्त्र के कुछ प्रयोग पढ़ें-

गमो अरिहंताणं

गमो सिद्धाणं

गमो आयरियाणं

गमो उवज्झायाणं

गमो लोए सव्वसाहूणं।

नवकार महामन्त्र सब मन्त्रों में श्रेष्ठ, परम प्रभावशाली एवं सर्व प्रकार सुख-सम्पत्ति देने वाला है। इस मन्त्र की एक माला प्रातःकाल अवश्य ही फेरनी

चाहिए। इससे जीवन में सदा सुख-मंगल प्राप्त होता है। नवकार महामन्त्र के एक-एक पद का अलग-अलग जप इस प्रकार किया है-

1. ॐ ह्रीं श्रीं गमो अरिहंताणं सप्ताह में 12500 जप करने से शत्रु आदि का भय दूर होगा।

2. ॐ ह्रीं श्रीं गमो सिद्धाणं कागज पर केसर से 125000 लिखने से सर्व कार्य सिद्ध होते हैं।

3. ॐ ह्रीं श्रीं गमो आयरियाणं 6 मास में 125000 जप करने से बड़े आदमी से प्रीति बढ़े, सब जनों का प्रिय होता है। प्रीति बढ़ती है।

4. ॐ ह्रीं श्रीं गमो उवज्झायाणं

5. ॐ ह्रीं श्रीं गमो लोए सव्वसाहूणं 27 दिन तक 27 माला प्रतिदिन फेरने से सब कार्य सिद्ध होते हैं, चिन्ता दूर होती है।

उलझन

‘ए फॉर एप्पल, बी फॉर बैट’ एक देसी बच्चा अँग्रेजी पढ़ रहा था। यह पढ़ाई अपने देश भारत में पढ़ाई जा रही थी।

‘ए फार अर्जुन, बी फार बलराम’ एक भारतीय संस्था में एक भारतीय बच्चे को विदेश में अँग्रेजी पढ़ाई जा रही थी।

अपने देश में विदेशी ढंग से और विदेश में देसी ढंग से। अपने देश में, ‘ए फॉर अर्जुन, बी फॉर बलराम’ क्यों नहीं होता? मैं उलझन में पड़ गया।

मैं सोचने लगा अगर अँग्रेजी हमारी जरूरत ही है तो ‘ए फार अर्जुन, बी फार बलराम’ ही क्यों न पढ़ा जाए?

-सुपारस जैन

परोपकार के समान दूसरा कोई धर्म नहीं

पर और उपकार दो शब्दों से मिलकर बना है परोपकार। इसका अर्थ है निःस्वार्थ भाव से दूसरों की सहायता करना। हमारी पूरी प्रकृति परोपकार पर टिकी हुई है। सूर्य नित्य अपनी किरणों से इस संसार को प्रकाशित करता है तो रात्रि में चांद अपनी चांदनी बिखेरता है, जबकि नदियां अपने जल से हमारी प्यास बुझाती हैं और पेड़-पौधों से हमें भोजन व ऑक्सीजन मिलती है। इसी तरह मनुष्य का दायित्व है कि वह भी दूसरों पर उपकार करे। तुलसीदास ने लिखा है परोपकार के समान कोई धर्म नहीं और पर-पीड़ा के समान कोई पाप नहीं है। परोपकार करके मनुष्य आत्मिक आनंद



प्राप्त कर सकता है, क्योंकि दूसरे की आत्मा को सुख पहुंचाकर वह अपनी ही आत्मा को सुखी बनाता है। मन, वचन और कर्म से परोपकार करने वाले मनुष्य संत की श्रेणी में आते हैं। दधीचि ऋषि ने देवताओं की रक्षा के लिए अपनी अस्थियां दान कीं, जबकि कर्ण ने अपने कवच और कुंडल याचक बने इंद्र को दे दिए। सच्चा

परोपकारी वही है जो प्रतिफल की कामना न करते हुए परोपकार करता है। गीता में भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं शुभ कर्म करने वाले का न यहां और न ही परलोक में विनाश होता है। शुभ कर्म करने वाला सद्गति को प्राप्त होता है।

परोपकार करके मनुष्य, परम तुल्य को प्राप्त करता है। इस प्रकार परोपकार ईश्वर प्राप्ति का एक मार्ग भी है। मनुष्य जितना परोपकारी बनता है, वह उतना ही ईश्वर के समीप पहुंच जाता है।

परोपकार करने से मनुष्य के जीवन की शोभा और महिमा बढ़ जाती है। सच्चा परोपकारी सदा खुश रहता है और उसे दूसरों की मदद करने में हर्ष की अनुभूति होती है।

वेदों में कहा गया है कि मनुष्य को ऐसा पवित्र और शुद्ध जीवन जीना चाहिए, जिससे समाज में उपकार, दानशीलता और सृजनता की भावना पैदा हो। वेदों का दर्शन यही है कि हम उत्तम बनकर उत्तम कर्म करें। यदि कोई मनुष्य धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन करता है, लेकिन वह परोपकार का कोई काम नहीं

करता है तो उसके धार्मिक अनुष्ठानों का कोई औचित्य नहीं होता। जिस अनुष्ठान से मनुष्य का ही भला नहीं होता, देवता भी उसे ग्रहण नहीं करते हैं। मनुष्य के लिए परोपकार से बड़ा कोई दूसरा धर्म नहीं है।

परोपकार केवल आर्थिक रूप में नहीं होता, बल्कि इसके लिए धन से ज्यादा जरूरी तन और मन की है। तन और मन से किसी की सहायता करने, अज्ञानी को ज्ञान देने, पशु-पक्षियों को दाना-पानी देने या किसी की निःस्वार्थ रूप से सेवा करने से भी परोपकार किया जा सकता है।

परोपकार करने से यदि मनुष्य को आंतरिक संतोष प्राप्त न हो तो उस परोपकार का कोई अर्थ नहीं होता। परोपकार करते समय मनुष्य के मन में किसी भी तरह की कोई भावना उत्पन्न नहीं होनी चाहिए। परोपकार हमेशा ऐसा होना चाहिए कि दाएं हाथ से किए गए कर्म की खबर बाएं हाथ तक को पता न चले। जिनके हृदय में सच्चे परोपकार की भावना जागृत रहती है, उन्हें यश की प्राप्त होती है। परोपकार से शत्रु को भी मित्र बनाया जा सकता है।

चुटकुले

1. अध्यापक- रेल किराया इतना अधिक बढ़ जाने पर भी यात्रियों की संख्या में वृद्धि हो रही है। इसका कारण बताइये।

छात्र- इसका कारण यह है कि हर एक आदमी यही सोचता है। अगले साल किराया और बढ़ जाएगा इसलिए अभी यात्रा कर ली जाए।

2. अध्यापक- तुम बड़े मूर्ख हो बालक, मैं तुम्हारी उम्र में अच्छी तरह किताब पढ़ लेता था

छात्र- श्रीमान आपको अच्छा मास्टर मिल गया होगा?

3. एक बच्चे ने दूसरे बच्चे से पूछा- क्या तुम चीनी भाषा पढ़ सकते हो?

दूसरे बच्चे ने कहा- हां, अगर वह हिंदी तथा अंग्रेजी में लिखी हो तो....

4. डॉक्टर- आपके तीन दांत कैसे टूट गए?

मरीज- पत्नी ने कड़क रोटी बनाई थी।

डॉक्टर- तो खाने से इनकार कर देते!

मरीज- जी, वही तो किया था !!



प्रस्तुति : विनय

मीठा नीम, कड़वा आम

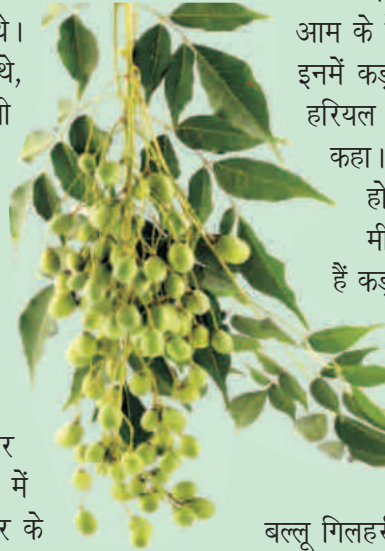
एक घना जंगल था। उसमें अनगिनत पेड़-पौधे थे। जंगल में एक नदी बहती थी। उस नदी के किनारे दो नन्हें-नन्हें पौधे एक साथ उगे। उनमें एक पौधा नीम का था और दूसरा पौधा आम का। दोनों पौधों में आपस में बहुत प्यार था। वे हवा के झोंकों से संग आपस में गले भी मिल लेते थे। समय के साथ-साथ दोनों पौधे बड़े होते जा रहे थे। जैसे-जैसे वे बड़े हो रहे थे, वैसे-वैसे उनका प्रेम भी बढ़ता जा रहा था। उनके प्रेम से अन्य पेड़-पौधे उनसे ईर्ष्या रखते थे। जब वे युवावस्था में पहुंचे तो उनकी जड़े जमीन के भीतर भी एक जुट हो गईं। नीचे जड़ें और ऊपर टहनियां आपस में घुलमिल गईं। कई प्रकार के पंखी भी दोनों वृक्षों की हवाओं और फलों का आनन्द लेने लगे।

एक बार की बात है नीम के पेड़ों में पीली-पीली निंबौलियां लदी हुई थी और दूसरी तरफ मोटे-मोटे आम भी। कुछ पंखी पीली-पीली निंबौलियां को खा रहे थे। उनका स्वाद बहुत ही बढ़िया और स्वादिष्ट था। हरियल तोता आम खा रहा था। किन्तु

उसका चेहरा इतना खुश नहीं दिख रहा था जितना कि निंबौलियां खाने वाले पंखियों का दिख रहा था। बल्लू गिलहरी ने हरियल से पूछा- 'अरे हरियल भैया! तुम आमों का आनन्द ले रहे हो फिर भी उदास दिखाई दे रहे हो। हम लोग कड़वी कही जाने वाली निंबौलियां खा रहे हैं फिर भी खुश हैं।'

'क्या बतालाऊं बल्लू इस आम के पेड़ के फल मीठे नहीं हैं, इनमें कड़वापन महसूस होता है।' हरियल तोते ने आम दिखाते हुए कहा। बल्लू बोली- 'ऐसा कभी हो सकता है क्या? आम मीठे नहीं तो खट्टे हो सकते हैं कड़वे नहीं।' 'तुम्हें मेरी बात पर विश्वास नहीं है तो खुद चख कर देख लो।' हरियल ने उसे एक आम देते हुए कहा।

बल्लू गिलहरी ने तुरंत आम चखा तो उसे भी कड़वापन लगा। वह बोली- 'सचमुच ये आम तो कड़वे हैं, लेकिन तुम हमारे नीम की निंबौली चख कर देखो।' हरियल ने नीम की निंबौली खाकर देखी तो उसे मजा आ गया। उसने मुस्कराते हुए कहा- 'हां बल्लू! इसमें तो बहुत मीठापन है। ये तो नन्हें-नन्हें आम जैसी लग रही हैं।' आम कड़वा है यह बात सारे जंगल में



आग की तरह फैल गयी। अब सारे पंछी निंबौलियां खाने में व्यस्त रहते। आम को कोई छूता तक नहीं। आम पक-पक कर खुद गिर जाते किन्तु उन्हें खाता कोई नहीं।

आम और नीम में आपस में तकरार होने लगी। नीम घमण्डी हो गया। उसने सोचा- 'मैं आम से अधिक मीठा हो गया हूं मुझे आप से दोस्ती रखने में क्या फायदा।'

एक दिन उनका झगड़ा इतना बढ़ गया कि जंगल के सारे पशु-पंछी वहां जमा हो गए। उनकी लड़ाई से सारे पेड़ बड़े खुश हुए। वे चाहते थे कि इनमें फूट पड़े और अलग हो जाए। आखिर में एक बूढ़ा हाथी वहां पहुंचा। उसने पूछा- 'भाई! तुम दोनों बचपन के साथी हो और आज ऐसे क्यों झगड़ रहे हो, कोई बात है तो बताओ?'

'देखो हाथी दादा! ये नीम मेरा दोस्त होकर भी कह रहा है कि तुम्हारे आम से अच्छी तो मेरी निंबौली है। भला इसमें मेरा क्या कसूर है। जैसी मेरी जड़ें होगी वैसे ही मेरे फल होंगे।'

हाथी आम की बात सुनकर सारा मामला समझ गया। उसने नीम को सबक सिखाते हुए कहा- 'आम भैया! तुम्हारी जड़ें बहुत अच्छी हैं और तुम्हारे फल भी मीठे हैं, किन्तु तुम्हारी संगत ठीक नहीं हैं।'

'क्या मतलब तुम्हारा?' नीम ने बीच में टोकते हुए पूछा। हाथी बोला- 'मेरा मतलब सीधा-सादा है। आम सदा मीठा होता है किन्तु इस आम की जड़ों में तुम्हारी जड़े

जुड़ी हैं इसलिए तुम्हारा कड़वा स्वभाव इसके फलों में उतर आया है, और आम की मिठास तुम्हारी निंबौलियों में आ गयी है। तुम्हें तो आम का शुक्रिया अदा करना चाहिए कि, इसके कारण तुम्हारी कड़वीं निंबौलियां भी मीठी हो गयी हैं, जिससे तुम्हारे भीतर घमण्ड आ गया है। इस बेचारे आम को देखो, जो तुमसे कुछ भी शिकायत नहीं कर रहा है। मीठे आम की संगत में कड़वा नीम मीठा इसलिए हुआ कि जिस वातावरण में अच्छे लोग होंगे, वहां के वातावरण में रहने वाले बुरे लोग भी अच्छे हो जाएंगे।'

हाथी की बात सुनकर सारे पशु-पक्षी एक साथ बोल उठे- 'हाथी दादा ठीक कर रहे हैं... हां... हां... हाथी दादा ठीक कह रहे हैं।'

नीम को वास्तविकता का पता चला तो वह बड़ा शर्मिन्दा हुआ। उसने अपनी गर्दन झुका ली। आम बोला- 'गर्दन झुकने से कुछ नहीं होता मेरे दोस्त। गलती का अहसास होना ही सबसे बड़ी बात है। मैं तुम्हारे कारण कड़वा हुआ मुझे कोई दुःख नहीं। मुझे खुशी इस बात की है कि मेरा दोस्त नीम, मेरा सच्चा साथी फिर से बन गया। आओ गले मिल जाए।' हवा ने आम के पेड़ की बात सुनकर एक जोरदार झोंका दिया कि नीम और आम आपस में फिर से मिल गए।

—प्रस्तुति : साध्वी वसुमति

पसीना आदमी के पौरुष को सार्थक कर जाता

○ फूलचंद मानव

इस खरीदे मकान को,
जो तुम दिखा कर इतरा रहे हो,
या इसे मकान से घर बना रहे हो
यहां खेत थे, खलिहान थे, कामगर पहलवान थे।
रोशनी का फव्वारा फूटता था रहट वाले कुओं से
हवा सनसनाती थी। मानो
एक आदिम संस्कृति लहलहाती थी।

खो रही सभ्यता के तथाकथित इस नये जंगल को
उसे तुम, कालोनी का नाम दे रहे हो,
छद्म है- छलावा है, नकली पहनावा है,
आधुनिकता के नाम पर।

याद हैं, यहां खाद्यान्न के बीज बोए थे पुरखों ने
भूख मिटाने को, भाग्य आजमाने को
और पसीना आदमी के पौरुष को सार्थक कर जाता था
संतुष्टि का एक नया बोध चारों तरफ नजर आता था।

होरी और धनिया के पिछवाड़े अब भावनाओं का गोदान नहीं होता
संस्कारों, व्यवहारों का चौपाल नहीं बैठ पाता, बराबर
निर्णय न्याय के लिए नहीं,
नफे-नुकसान के वास्ते
किये जाते हैं।

राजनीति के अंधेरे में स्वार्थों के टाट सिए जाते हैं।



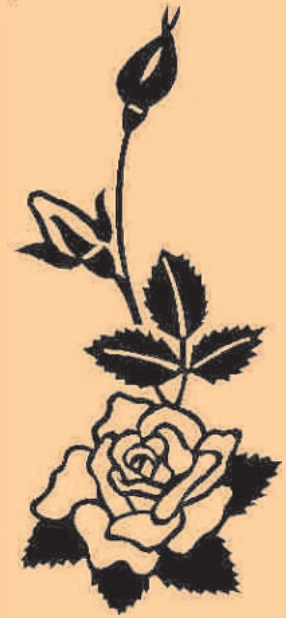
मंगल था, मेहरू था, जोरावर केहरू था
छिंदो, मिंदो जैसे नामों से भत्ता मंगवाते थे
घुटने पर प्याज फोड़
हथेली का जोर आजमाते थे, नून रोटी खाते थे ।
मछनी मक्खन, और डबलरोटी जैसी ब्रेड खा रही तरोताजा पीढ़ी
पीजा, परोंठा, आलू, समोसा आजमाती,
मोटी हो रही है ।
नई तकनीक में,
भारी बस्ते का बोझ ढोती पीढ़ी,
आज क्यों छोटी हो रही है?

इन ठाठ-बाठ वालों को, मोटरों और बम्बूकाट वालों को
पार्टनर! तूने कितना जाना है
पर्दा-बेपर्दा/लुगाइयों पर चलाते हुए लात, मृत मात,
संबंधों के जंजाल को कहां तक पहचाना है ।

ऊपर उठती इमारतों में
डूबती अर्द्ध चेतन संस्कृति के दैत्य नजर आते हैं
आस-पास से ही नहीं, घरों में शर्मशार मार खाते-
दोहरे-तिहरे मुखौटे चढ़ाए सड़कों पर नजर आते हैं ।

जनाव, परेशानी, तेजी, सावधानी
पनपती है शहराती अंदाज में, सीधे आगाज की तरह
चकाचौंध-सी, बकरियां हर चौराहे पर,
आदर्श-बाएं-दाएं या सीधे चलने की मांग करते हैं,
यथार्थ-जीते हुए भी जैसे स्वांग भरते हैं ।

फटी चादर, धुली कमीजें संभ्रात समाज का धोखा है
मटर-पनीर को कीमा बतलाने का यह अंदाज चोखा है ।



सही तरीके से लें पौष्टिक आहार

अच्छी सेहत के लिए पौष्टिक आहार का सेवन बहुत जरूरी है लेकिन पौष्टिक आहार लेना बस काफी नहीं है। जरूरी है उसके सेवन के सही तरीकों का, ताकि उसका पूरा लाभ शरीर को मिल सके।

सूखे मेवे- दिन भर में एक मुट्ठी सूखे मेवों का सेवन शरीर के लिए अति उत्तम माना जाता है। इससे शरीर को कई पौष्टिक तत्व मिलते हैं। अक्सर हम सूखे मेवे बस डिब्बे से निकालते हैं और

खा लेते हैं, जबकि यह तरीका सही नहीं है। इस प्रकार के सेवन से गैस समस्या हो सकती है जब भी सूखे मेवे खाएं इन्हें कुछ घंटे पहले भिगो दें। अखरोट और मूंगफली को 10 से 12

घंटे के लिए, बादाम को 7 से 8 घंटे के लिए काजू को 4 घंटे के लिए भिगोएं। भीगने के उपरांत उन्हें निकालें और प्लेट या कटोरी में रख कर खाएं। सूखे मेवों की पौष्टिकता का पूरा लाभ शरीर को मिलेगा, क्योंकि शकाहारी लोगों को ओमेगा-3 इन्हीं मेवों से प्राप्त हो सकता है।



दही का सेवन- दही दिल के लिए अच्छा होता है तथा नियमित दही के सेवन से चेहरे पर चमक बनी रहती है। दही के सेवन का सबसे अच्छा समय सुबह और दोपहर का होता है। दही का सेवन सेहत के लिए अच्छा होता है। ध्यान दें दही के ऊपर आए पानी को फेंके नहीं। उसे दही में मिलाकर खाएं। उस पानी में प्रोटीन, विटामिन बी12, कैल्शियम की मात्रा होती है।

फल का सेवन- फलों का सेवन सेहत की चुस्ती के लिए उत्तम माना जाता है। फलों में कई विटामिंस होते हैं, जो शरीर को स्वस्थ रखते हैं। ध्यान दें फल जिन्हें छीलने की आवश्यकता न हो उन्हें छील

कर न खाएं। अच्छे से धोकर पोंछकर खाएं ताकि छिलकों में समाहित पौष्टिक तत्व हम पा सकें।

सब्जियां- सेहत के लिए सब्जियों का अहम रोल होता है। स्वस्थ और खूबसूरत रहने के लिए सब्जियों का नियमित सेवन करना चाहिए। सब्जियों का नियमित सेवन करना

चाहिए। सब्जियों को अगर ज्यादा कुक किया जाए या उबाला जाए तो इनकी पौष्टिकता कम हो जाती है। सब्जियों को हो सके तो स्टीम करके ही उनका सेवन करें, जिससे उनका पूरा लाभ शरीर को मिल सके। कम तेल व कम मसालों में ही इन्हें पकाना बेहतर होता है।

दालें- दालों में प्रोटीन्स की प्रचुर मात्रा होती है। अक्सर लोगों को शिकायत रहती है कि दाल खाने के बाद गैस की समस्या हो जाती है, क्योंकि वे दाल खाने की सही तरीका नहीं जानते। दालों को धोकर कुछ समय के लिए भिगो कर रखना चाहिए, फिर उन्हें

बनाना चाहिए। रात्रि में दाल का सेवन ठीक नहीं रहता, दोपहर को ही दाल का सेवन करें। इसी प्रकार बींस को कुछ देर लगभग 20 से 25 मिनट तक भिगो कर रखें। फिर बनाएं। इसके अतिरिक्त चाहे दाल हो या सब्जी, ताजी खानी चाहिए। सब्जियां मौसमी ही खाएं। पालक को स्टीम कर खाने से शरीर को लौह तत्व की प्रचुर मात्रा मिलती है। सलाद के लिए गाजर, मूली, खीरा, ककड़ी, टमाटर को कुछ देर पानी में भिगोकर, पोंछ कर खाना चाहिए और सलाद भी ताजा काटकर खाना ही लाभप्रद है।

-योगी अरुण तिवारी

दुख का कारण

एक व्यापारी को नींद न आने की बीमारी थी। उसका नौकर मालिक की बीमारी से दुखी रहता था। एक दिन व्यापारी अपने नौकर को सारी संपत्ति देकर चल बसा। सम्पत्ति का मालिक बनने के बाद नौकर रात को सोने की कोशिश कर रहा था, किन्तु अब उसे नींद नहीं आ रही थी। एक रात जब वह सोने की कोशिश कर रहा था, उसने कुछ आहट सुनी। देखा, एक चोर घर का सारा सामान समेट कर उसे बांधने की कोशिश कर रहा था, परन्तु चादर छोटी होने के कारण गठरी बंध नहीं रही थी।

नौकर ने अपनी ओढ़ी हुई चादर चोर को दे दी और बोला, इसमें बांध लो। उसे जगा देखकर चोर सामान छोड़कर भागने लगा। किन्तु नौकर ने उसे रोककर हाथ जोड़कर कहा, भागो मत, इस सामान को ले जाओ ताकि मैं चौन से सो सकूँ। इसी ने मेरे मालिक की नींद उड़ा रखी थी और अब मेरी। उसकी बातें सुन चोर की भी आंखें खुल गईं।

-प्रस्तुति : प्राची जैन

मासिक राशि भविष्यफल-जुलाई 2017

○ डॉ. एन. पी. मित्तल, पलवल

मेष- मेष राशि के जातकों के लिये व्यापार व्यवसाय की दृष्टि से यह माह अवरोधों के चलते आर्थिक रूप से शुभ फल दायक है। किसी नई योजना में धन लगाना श्रेयस्कर नहीं है। परिवार में सामन्जस्य बनाए रखने के लिये माह के उत्तरार्ध में प्रयास करना होगा। समाज में मान-सम्मान बना रहेगा। कुछ जातकों का नया वाहन खरीदने का विचार बनेगा।

वृष- वृष राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह पूर्वार्ध की अपेक्षा उत्तरार्ध में अच्छा है। कहीं से धनागम का समाचार भी मिल सकता है तथा किसी नये कार्य की योजना भी बन सकती है। घर परिवार में कोई मांगलिक कार्य भी संभावित है। अपने जीवन साथी के स्वास्थ्य का माह के पूर्वार्ध में विशेष ध्यान रखें।

मिथुन- मिथुन राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह श्रमसाध्य फलदायक है। अपने क्रोध पर काबू रखें। आय के नये स्रोत खुलने की संभावना है। कुछ जातकों को रूका हुआ धन भी प्राप्त हो सकता है। पत्नी की सलाह कारगर साबित होगी। समाज में मानहानि होने की स्थिति आ सकती है।

कर्क- कर्क राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह आय के साथ व्यय भी व्यापक रूप से होगा। कुछ जातकों को भूमि-भवन का लाभ संभावित है। घर-परिवार में कोई उत्सव संभावित है। कुटुम्बजनों का सहयोग मिलेगा। समाज में मान सम्मान बना रहे, इसके लिये आपको अपने क्रोध पर काबू रखना होगा।

सिंह- सिंह राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह कुल मिलाकर अच्छा फल देने वाला ही कहा जायेगा, फिर भी उत्तरार्ध की अपेक्षा पूर्वार्ध अधिक शुभ फल दायक है। उत्तरार्ध में कोई विशेष खर्चा होने की संभावना है। कुछ प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना भी होगा, उस समय धैर्य से काम लें। परिवार तथा मित्रों में सामन्जस्य बना रहेगा।

कन्या- कन्या राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह अवरोधों के चलते सफलता देने वाला है। कुछ जातकों के यहां चोरी आदि का भय है, सचेत रहें। शत्रु सिर उठाएंगे किन्तु वे अपने मकसद में कामयाब नहीं हो पायेंगे। घर-परिवार के लोग सहयोग के लिए आगे आएंगे। बुजुर्गों का आदर-सत्कार आपके शुभ फल प्राप्त करने में सहायक होगा।

तुला- तुला राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह शुभफलदायक है। आमदनी अच्छी तथा खर्च मध्यम स्तर का रहेगा। नई योजनाओं के बनने से मन में प्रसन्नता रहेगी। घर-परिवार में सामन्जस्य बना रहेगा। कुछ जातकों का लंबी दूरी की यात्रा का योग बनेगा, जो लाभ प्रद रहेगा। समाज में मान सम्मान बना रहेगा। परिवार तथा मित्रों में सामन्जस्य बना रहेगा।

वृश्चिक- वृश्चिक राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह अनुकूल फल देने वाला कहा जाएगा। किसी नवीन कार्य के प्रारंभ होने की भी संभावना है। इस कार्य में शत्रु आपका विरोध करेंगे। परंतु अन्ततः आप कामयाब होंगे। घर-परिवार में सामन्जस्य बना रहेगा। वाहन सावधानी से चलाएं। अपने जीवन साथी के स्वास्थ्य की अनदेखी न करें।

धनु- धनु राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह पर्याप्त आमदनी देने वाला होते हुए भी व्यायाधिक्य रहेगा। कुछ जातकों का भूमि, धन, भवन के मद में व्यय होगा। यात्राओं की भी अधिकता रहेगी तथा वाहन आदि से चोट लगने का भी भय है। परिवार जनों में कलह न हो इसके लिये प्रयासरत रहें। अपने गले को खराब होने से बचाएं।

मकर- मकर राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह आय के लिहाज से अच्छा रहेगा लेकिन खर्च भी मुंह बाए खड़े रहेंगे। कुछ जातकों का भूमि भवन की खरीद पर धन खर्च होगा। कुछ का व्यायाधिक्य अकारण भी हो सकता है। दाम्पत्य जीवन आमतौर पर सामान्य रहेगा। कुंभ- कुंभ राशि के जातकों के लिये व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह उत्तम फल देने वाला है। किसी भी नई स्कीम में धन का निवेश करते समय सोच विचार से काम करें या किसी योग्य व्यक्ति से सलाह लें। समारोहों या पार्टियों में खान-पान के प्रति सावधानी अपनाएं अतः अपने बलबूते पर ही कार्य करें। समाज में मान प्रतिष्ठा बनी रहेगी। दाम्पत्य जीवन आमतौर पर सामान्य रहेगा।

मीन- मीन राशि के जातकों को व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह परिश्रमसाध्य लाभ देने वाला है। आपका आत्म विश्वास बना रहेगा। कुछ शत्रु सिर उठाएंगे पर आप उन्हें परास्त कर पायेंगे। कुछ नवीन लोगों के संपर्क आपके काम आएंगे। मित्र भी आपकी सहायता के लिये आगे आयेंगे। कुछ जातकों का रूका हुआ पैसा भी मिलने के योग हैं। परिवार जनों में अपेक्षित सामन्जस्य बना रहेगा। स्वास्थ्य कुछ नरम रहेगा।

-इति शुभम्

प्रदूषण-मुक्त पर्यावरण जन-जागरण से ही संभव

पर्यावरण-शिखर सम्मेलन, ऋषिकेश में
पूज्य आचार्यश्री का उद्बोधन
सुप्रसिद्ध परमार्थ आश्रम, ऋषिकेश के प्रमुख पूज्य स्वामी चिदानंद सरस्वती 'मुनिजी' के 65वें जन्म-दिवस पर आयोजित दो दिवसीय पर्यावरण शिखर सम्मेलन के समापन समारोह को संबोधित करते हुए पूज्य आचार्यश्री रूपचन्द्रजी ने कहा- प्रकृति-प्रदन्त हर अवदान अपने में शुद्ध है, पावन है और दिव्य है। पृथ्वी, पानी, अग्नि, हवा और आकाश-विस्तार में कहें- मां गंगा, यमुना, नर्मदा आदि सभी नदियां, पर्वत-जंगल, पेड़-पौधे, प्राणदायिनी वायु, अनंत संभावनाओं को अपने में समेटे विराट् आकाश- सब कुछ अपने में दिव्य और भव्य हैं। कहीं कोई प्रदूषण नहीं, मैलापन और गंदगी नहीं। इतना ही नहीं, चौरासी लाख जीवन-योनियों में एक मनुष्य नामक प्राणी के सिवा हमें कहीं पर भी प्रदूषण और गन्दगी की समस्या नहीं मिलेगी। इसका सीधा-सा अर्थ है इस धरती पर पूरे पर्यावरण-प्रदूषण की जड़ केवल और केवल इन्सान है।

आपने कहा- सभ्यता, सुरक्षा और समृद्धि के नाम पर आदमी ने पवित्र नदियों

को गंदे नालों में तब्दील कर दिया है, विशाल दरिया के जहरीले जल में जलचर प्राणी दम तोड़ रहे हैं, कार्बन-उत्सर्जित गैसों से आदमी को सांस भर शुद्ध हवा भी मिलना मुश्किल हो रहा है। ये सारी समस्याएं स्वयं मनुष्य द्वारा निर्मित हैं तो इनका समाधान भी मनुष्य को ही करना है। आपने कहा- मैं देख रहा हूं पिछले अनेक वर्षों में विश्व-स्तरीय सम्मेलनों में मानव-समाज ने इस दिशा में अनेक प्रस्ताव भी पारित किये हैं। किंतु पर्यावरण-प्रदूषण से जुड़ी समस्याएं सर्व-ग्रासी बनती जा रही हैं। इसका कारण उन प्रस्तावों के अनुरूप ठोस कदम नहीं उठाए जा रहे हैं। हम अपने देश की ही चर्चा करें। कितने-कितने हजार करोड़ों रूपयों की योजनाओं के बावजूद जीवनदायिनी मां गंगा-यमुना की धारा निर्मल पावन क्यों नहीं हो पा रही है। जब तक नगरों-महानगरों के गंदे नाले इसमें गिरते रहेंगे, कल-कारखानों के जहरीले कचरे इसमें प्रवाहित होते रहेंगे, ये नदियां कैसे अपनी विशुद्धता निर्मलता पा सकेंगी? और यह कार्य योजनाओं से नहीं, देश-व्यापी जन-जागरण से ही संभव होगा।

आपने कहा- इस शिखर सम्मेलन में दिग्गज संत-पुरुषों और राजनेताओं ने महत्त्वपूर्ण सुझाव दिये हैं। मैं तो इतना-सा कहना चाहूंगा यहां उपस्थित विशाल जन-समुदाय केवल एक संकल्प ले ले- मैं अपनी ओर से, अपने परिवार की ओर से और अपने कल-कारखाने, उद्योग-व्यवसाय की ओर से इन पवित्र नदियों में गंदगी प्रवाहित नहीं करूंगा। इसके साथ अपने-अपने नगर में समाज को इस दिशा में जागृत करूंगा- मैं समझता हूं यह एक संकल्प भी प्रदूषण-मुक्त पर्यावरण की दिशा में मील का पत्थर बन जाएगा। आपने कहा- व्रत-संकल्प की महान् महिमा सभी महापुरुषों ने गाई है। भगवान महावीर ने महाव्रत/अणुव्रत को सदाचार की आधार-शिला माना है। श्रीमद् भगवद्गीता में भी कहा गया है- स्वल्प मप्यस्य धर्मस्य, त्रायते महतो भयात्- हे अर्जुन, इस धर्म का स्वल्प आचरण भी महान् भय से रक्षा कर देता है। ये नदियां, यह पूरा पर्यावरण-इनको हम प्रदूषित न करने का संकल्प लें। ये तो अपने में विशुद्ध निर्मल ओर पवित्र हैं ही। अपने जन्म-दिवस पर पूज्य स्वामी चिदानंदजी ने पूरे देश का ध्यान पावन पर्यावरण की प्रेरणा की ओर आकृष्ट किया है, इसके लिए मेरी ओर से शत-शत बधाइयां।

इस प्रसंग पर पूज्य स्वामी चिदानंद सरस्वती 'मुनि जी' ने कहा- इस आयोजन का उद्देश्य प्रदूषण-मुक्त पर्यावरण के प्रति देशव्यापी जन-जागरण का ही है। जब-जब जिस-जिस समस्या से देश गुजरा है संत-पुरुषों ने ही तब-तब जन-जागरण द्वारा उससे मुक्ति दिलाई है। राज्य-शक्ति और संत-शक्ति मिल जाए तो असंभव भी पलक भर में संभव हो जाता है। देश भर में शौचालय-निर्माण द्वारा स्वच्छता अभियान तथा नमामि गंगे जैसी समस्त नदियों की पावन धाराओं के लिए देश व्यापी जन-आन्दोलन बन जाए, इसके लिए आज इस ऋषिकेश की धरती महान् संत विभूतियों ने आशीर्वाद दिया है, मैं इसके लिए सबके प्रति आभार प्रकट करता हूं।

इस प्रदूषण-मुक्त पर्यावरण शिखर सम्मेलन को योग गुरु बाबा रामदेव, विख्यात भागवत कथाकार श्री रमेश भाई ओझा, अनेक महामंडलेश्वर संत पुरुष, क्रिश्चियन मुस्लिम सिक्ख धर्म नेताओं तथा उत्तराखंड के माननीय मुख्यमंत्री, महामहिम राज्यपाल के.के. पाल, सिने-कलाकार श्री विवेक ओवेराय आदि ने भी संबोधित किया। इससे पूरे देश में इन अभियानों के प्रति जन-जागरण का एक प्रभावशाली संदेश जाएगा, ऐसी आशा है।

पूज्य आचार्यश्री विदेश-यात्रा पर पूर्व सूचना के अनुसार दिनांक 26-27 जून, 2017 मध्य रात्रि पूज्य आचार्यश्री रूपचन्द्रजी अपने शिष्य योगी अरूण तिवारी के साथ करीब दो माह की अमेरिका-यात्रा पर रवाना हो गए हैं। पूज्या

प्रवर्तिनी साध्वीश्री मंजुलाश्रीजी ने अपनी सहयोगी साध्वियों तथा मानव मंदिर गुरुकुल परिवार के साथ सफल धर्म-यात्रा के लिए मंगल मंत्रों से पूज्य गुरुदेव को विदाई दी।

ॐ

स्मृति-संबल

श्री अशोक जैन, सुनाम का दुःखद निधन



सुनाम, पंजाब का यशस्वी परिवार स्वर्गीय श्री बाबूराम जैन, भांडेवाले की दानशीलता की चर्चा आज भी समाज के मुख पर है। उनके ज्येष्ठ पुत्र श्री अशोकजी जैन का पिछले दिनों दुःखद निधन हो गया। अपने सात भाइयों में सबसे बड़े श्री अशोकजी जैन पिछले कुछ समय से बीमारियों से घिर

गए थे। वे स्वभाव से सहज सादगी का जीवन जीते थे। इस प्रसंग पर उनकी मातुश्री श्रीमती विमलादेवीजी तथा धर्म-पत्नी श्रीमती पुष्पाजी को स्मृति संबल प्रदान करते हुए आचार्यश्री रूपचन्द्रजी तथा महासती मंजुलाश्री जी ने कहा- जन्म के साथ मरण, संयोग के साथ वियोग जीवन का यह अटल नियम है। ऐसे प्रसंग पर जो अपना मन वीतराग-वाणी पर टिका लेता है, वही धर्म का मर्म जान पाता है। पूरे परिवार के इन संवेदना के क्षणों में मानव मंदिर मिशन सुनाम, तथा मानव मंदिर गुरुकुल आपके साथ है। दिवंगत आत्मा के प्रति भाव भरी श्रद्धांजलि।





1



2

1. स्वामी चिदानंद सरस्वती 'मुनिजी' के जन्मोत्सव पर आयोजित कार्यक्रम में पूज्य गुरुदेव अपने विचार रखते हुए। साथ में हैं स्वामी चिदानंद सरस्वती, उत्तराखंड के राज्यपाल महामहिम श्री के.के. पाल व संत-परिषद, परमार्थ आश्रम ऋषिकेश, उत्तराखंड।
2. इस अवसर पर संतों व महामहिम राज्यपाल ने पर्यावरण रक्षा के लिए ग्लोब पर गंगा जल से अभिषेक कर संकल्प लिया।



-इस कार्यक्रम में पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री रूपचन्द्र जी, बाबा रामदेव, रमेश भाई ओझा 'भाईश्री जी', स्वामी चिदानंद सरस्वती, जत्येदार ज्ञानी गुरुबचन सिंह जी, साध्वी भगवती, उत्तराखंड के मुख्यमंत्री श्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत, श्रीमती हेमामालिनी, श्री विवेक ओबराय व अन्य गणमान्य लोगों ने भाग लिया।



1



2

1. एक विशेष वार्तालाप में बायें से- जत्येदार ज्ञानी गुरुबचन सिंह, आचार्यश्री रूपचंद्रजी महाराज, योगी अरुण तिवारी, श्री सुभाष चंद्र तिवारी, श्री शैलेंद्र कुमार झा, श्री परमजीत सिंह चंडोक, श्री कुलदीप सिंह भोगल, परमार्थ आश्रम, ऋषिकेश।
2. पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री रूपचन्द्रजी महाराज व महामंडलेश्वर महेश्वरानंद जी महाराज की धर्म-चर्चा। साथ में है योगी अरुण, सुभाष चंद्र तिवारी, शैलेंद्र कुमार झा आदि।

पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री रूपचंद्रजी तथा पूज्या प्रवर्तिनी साध्वीश्री मंजुलाश्री जी के आशीर्वाद और साध्वी समताश्री जी के निर्देशन में मानव मंदिर गुरुकुल के छात्रों ने सी.बी.एस.ई. परीक्षा परिणाम में अभूतपूर्व प्रदर्शन किया, गुरुकुल के छात्रों की मेहनत, समाज के उदार सहयोग और मानव मंदिर के शिक्षकों व अन्य सभी के सुप्रयासों से मानव मंदिर गुरुकुल ने एक कीर्तिमान स्थापित किया है। सभी को बधाई।

By the Grace of Pujya Acharyashri Roopchandraji and Sadhviji our children have performed astonishing in the 10th CBSE exams. This milestone has only being reached by the hard work of the children, your cooperation, and the teachers of the Gurukul. Congratulations to all.

10th CBSC Result Announced Best Result Our Manav Mandir Gurukul



Ashok 10 CGPA



Mansi 9.0 CGPA



Devendar 8.8 CGPA



Deepak 8.8 CGPA



Jay 8.6 CGPA



Pinki 8.4 CGPA



1. अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर कुमाऊँ राइफल की संस्था- “केंद्रीय समाज कल्याण” द्वारा आयोजित योग व स्वास्थ्य कार्यक्रम के पश्चात् साध्वी समताश्री व योगी अरुण महिला पदाधिकारियों के साथ।
2. समाज सेवी श्री सुभाष चंद्र तिवारी के जन्म-दिन पर ब्राह्मण समाज ऑफ इंडिया के पदाधिकारी गण पूज्य गुरुदेव से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए।



1. मानव मंदिर गुरुकुल के छात्रों की ग्रीष्मकालीन पर्यटन की कुछ झलकियाँ- भीमताल के कैँचीधाम के सामने गुरुकुल के छात्र-छात्रायें, स्टाफ आदि।
2. भीमताल आश्रम के पदाधिकारी स्वामी करुणामूर्ति जी, श्री संजय टंडन जी व प्रकाशमूर्ति जी साध्वी समताश्री जी व योगी अरुण के साथ, शिवानंद तपोस्थली, भीमताल।



- साध्वी समताश्री व योगी अरुण के नेतृत्व में, अल्मोड़ा, उत्तराखंड स्थित ज्योतिर्लिंगों में से एक नागेश्वर ज्योतिर्लिंग जो जागेश्वर-धाम के नाम से जाना जाता है, उसके सम्मुख-मंदिर गुरुकुल के छात्र-छात्रायें, स्टाफ आदि।



-भारतीय सेना, पिथौरागढ़ में तृतीय अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर हास्य-योग करवाते हुए योगी अरुण, साथ में है साध्वी समताश्री जी महाराज।



-भारतीय सेना, पिथौरागढ़ में तृतीय अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर प्राणायाम करवाते हुए योगी अरुण तिवारी।



1. भारतीय सेना, पिथौरागढ़ में तृतीय अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर साध्वी समताश्री व योगी अरुण तिवारी का स्मृति-चिन्हों से सम्मान करते हुए सेना के वरिष्ठ अधिकारी-गण।
2. साध्वी समताश्री व योगी अरुण के साथ है सेना के अधिकारिकारी-गण व मानव मंदिर मिशन, पिथौरागढ़ के कार्यकर्ता आदि।

P. R. No.: DL(S)-17/3082/2015-17

Rgn. No.: DELHIN/2000/2473

Date of Post : 27-28



SEVA-DHAM Plus

Since 1994

.....The Wellness Center

***Bootox your brain with special naturopathy
Therapy as a brain detoxification programme***

***Is your brain helping you to
stay beautiful
Donot be affraid of changes***



***Detox Your
Brain at
Sevadham
Hospital***



KH-57, Ring Road, (Behind Indian Oil Petrol Pump), Sarai Kale Khan, New Delhi - 110013

Ph. : +91-11-2632 0000, +91-11-2632 7911 Fax : +91-11-2682 1348 Mob. : +91-9868 99 0088, +91-9999 60 9878

Website : www.sevadham.info E-mail : contact@sevadham.info

**प्रकाशक व मुद्रक : श्री अरुण तिवारी, मानव मंदिर मिशन ट्रस्ट (रजि.)
के.एच.-57 जैन आश्रम, रिंग रोड, सराय काले खाँ, इंडियन ऑयल पेट्रोल पम्प के पीछे,
पो. बो.-3240, नई दिल्ली-110013, आई. जी. प्रिन्टर्स 104 (DSIDC) ओखला फेस-1
से मुद्रित।**

संपादिका : श्रीमती निर्मला पुगलिया